संपादकीय जागरण

रविवार, 10 जून, 2018 : द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण 11 वि. 2075

जहां अज्ञान है, वहां दुख आकर ही रहेगा

कश्मीर के संकेत

केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह के दो दिवसीय जम्मू-कश्मीर दौरे के समय काफी कुछ ऐसा देखने को मिला जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि घाटी के माहौल को बदलने में कामयाबी हासिल की जा सकती है। एक तो गृहमंत्री के दौरे के समय अलगाववादी संगठनों ने बंद और हड़ताल बुलाने से गुरेज किया और दूसरे उनके कई कार्यक्रमों में आम कश्मीरियों ने ठीक-ठाक संख्या में उत्साह दिखाते हुए शिरकत भी की। इसके बावजूद यह कहना कठिन है कि केंद्र सरकार कश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियान को रमजान के बाद भी स्थगित रखेगी या नहीं? निःसंदेह यह नहीं कहा जा सकता कि केंद्र सरकार की सदाशयता के जवाब में आतंकी गुट अपनी गतिविधियों पर लगाम लगाएंगे, लेकिन कम से कम इतनी अपेक्षा तो की ही जाती है कि पत्थरबाज अपनी हरकतों से बाज आएं। यह अपेक्षा इसलिए भी की जाती है, क्योंकि उन्हें माफी देने की बात केंद्रीय गृहमंत्री ने भी की। यह सही है कि कुछ पत्थरबाज ऐसे हो सकते हैं जिन्हें नादान या फिर गुमराह युवकों की संज्ञा दी जाए, लेकिन एक बड़ी संख्या उनकी ही है जो आतंकियों के समर्थक और साथ ही कश्मीर के अमन-चैन के दुश्मन हैं। दरअसल ये वे पत्थरबाज हैं जिन्होंने अराजकता को एक धंधा बना लिया है। इसी तरह कुछ तत्वों ने अलगाववाद को भी एक धंधे में तब्दील कर लिया है। हुर्रियत कांफ्रेंस जैसे संगठन अलगाववाद का कारोबार ही कर रहे हैं। चूंकि जम्मू-कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती इस कोशिश में हैं कि संघर्ष विराम के तौर पर परिभाषित किया जा रहा आतंकवाद विरोधी अभियान का स्थगन रमजान के बाद भी जारी रहे इसलिए उन्हें अपने स्तर पर यह कोशिश करनी होगी कि अराजकता के धंधे में तब्दील हो चुकी पत्थरबाजी पर लगाम लगे। सच तो यह है कि यह कोशिश कश्मीरियों का नेतृत्व करने वाले अन्य लोगों और खासकर मुख्यधारा के राजनीतिक दलों को भी करनी चाहिए। उन्हें यह याद रखना होगा कि ताली एक हाथ से नहीं बजती।

तमाम आलोचना और जोखिम के बाद भी केंद्र सरकार ने आतंकवाद विरोधी अभियान को स्थगित करने की जो पहल की उस पर सकारात्मक रवैये का परिचय दिया जाना समय की मांग है। घाटी की जनता को यह समझना होगा कि केंद्र सरकार की पहल को नाकाम करने की कोशिश कर रहे पाकिस्तानपरस्त तत्व उसके हितैषी नहीं हो सकते। चूंकि कश्मीर का माहौल कहीं अधिक दूषित हो गया है और आजादी की बेतुकी मांग मजहबी रंगत से लैस हो गई है इसलिए घाटी के माहौल को आनन-फानन नहीं सुधारा जा सकता। इसमें अच्छा-खासा समय लग सकता है। बेहतर होगा कि केंद्र सरकार इतने मात्र से संतुष्ट न हो कि गृहमंत्री राजनाथ सिंह के हाल के दौरे के समय कश्मीर से कुछ अच्छे संकेत मिले। ऐसे संकेत अतीत में भी मिल चुके हैं और यह किसी से छिपा नहीं कि उनसे कुछ हासिल नहीं हो सका। केंद्र सरकार को इससे भी अवगत होना चाहिए कि पाकिस्तान कश्मीर को अशांत बनाए रखने के लिए नए सिरे से सक्रिय हो सकता है। ऐसे में आवश्यक यही है कि भारत सरकार पाकिस्तान पर दबाव डालने की अपनी रणनीति को और धार दे।

प्रयासों का सुफल

कुछ वर्ष पहले तक जिस जापानी इंसेफ्लाइटिस (जेई) व एक्यूट इंसेफ्लाइटिस सिंड्रोम (एईएस) बीमारियों के नाम से ही पूर्वांचल के लोग कांप जाया करते थे, अब उसका इलाज न केवल सुलभ हो चुका है, बल्कि इन बीमारियों से मासूम बच्चों की होने वाली मौतों की संख्या में भी खासी कमी आई है। कुछ ही समय में उत्तर प्रदेश ब्लॉक लेवल पर मिनी पीडियाट्रिक इंटेसिव केयर यूनिट (पीकू) वाला देश का पहला राज्य हो जाएगा, जबकि टाटा ट्रस्ट के सहयोग से वैन में मोबाइल अस्पताल संचालित कराते हुए गोरखपुर के पिपराइच और सिद्धार्थनगर के उसका बाजार ब्लॉक को भी जेई-एईएस उपचार के लिए मॉडल के तौर पर विकसित किया जा रहा है। बस्ती व गोरखपुर मंडल के सात जिलों सहित गोंडा, सीतापुर, रायबरेली, आजमगढ़, मऊ व हरदोई में भी यह केंद्र अगले महीने तक बन कर तैयार हो जाएंगे।

> पूर्वांचल धीरे-धीरे जेई और एईएस बीमारी से तो मुक्त होता जा रहा है, लेकिन इसके पूरी तरह से खात्मे के लिए जनजागरूकता की जरूरत है

कुल मिलाकर अब हालात पूरी तरह नियंत्रण में हैं, लेकिन इतनी बड़ी उपलब्धि यूं ही नहीं हासिल हुई है, बल्कि इसका श्रेय जाता है मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को। गोरखपुर से सांसद रहते हुए उन्होंने इस दिशा में जो कार्य शुरू किया, उसका न केवल पूरा-पूरा असर देखने को मिला, बल्कि अब प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर वह इस दिशा में जो कार्य कर रहे हैं, वह किसी भी जनप्रतिनिधि के लिए एक मिसाल भी है। बहरहाल पूर्वांचल धीरे-धीरे जेई और एईएस बीमारी से तो मुक्त होता जा रहा है, लेकिन इसके पूरी तरह से खात्मे के लिए जनजागरूकता की जरूरत है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या 2019 में राजग से अलग हो कर चुनाव लड़ना शिवसेना के लिए फायदेमंद साबित होगा?

आज का सवाल
क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चीनी दौरों से दोनों देशों के रिश्ते मजबूत होंगे?

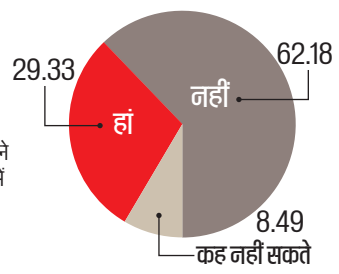

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।
सभी आंकड़े प्रतिशत में।

दोहरे मापदंड की एक और मिसाल

सुरेंद्र किशोर

संघ परिवार को सेक्युलर जमात की विफलताओं का लाभ मिलता है और फिर भी यह जमात अपनी विफलताओं पर कभी ध्यान देने को तैयार नहीं होती

संघ परिवार को लेकर कांग्रेसियों और कम्युनिस्टों का एक बार फिर दोहरा रवैया सामने आया। तथाकथित सेक्युलर जमात का कोई बड़ा नेता जब आरएसएस से संपर्क साधता है तो उसके खिलाफ कोई आवाज नहीं उठती, लेकिन जब उनके बीच का कोई नेता संघ मुख्यालय चला जाता है तो हाय-तौबा मच जाती है, जैसे अभी हाल में प्रणब मुखर्जी के नागपुर जाने से मची। ऐसे मौके पर कहा जाता है कि संघ परिवार को प्रतिष्ठा दी जा रही है, उसे ताकतवर बनाया जा रहा है और इससे अंततः भाजपा को ताकत मिलती है। सच यह है कि संघ परिवार को सेक्युलर जमात की विफलताओं का लाभ मिलता है, लेकिन यह जमात अपनी विफलता पर ध्यान देने के बजाय आरोप-प्रत्यारोप से ही अपना काम निकाल लेना चाहती है। इन दिनों उसका प्रयास महागठबंधन बनाकर संघ परिवार यानी भाजपा यानी राजग को पराजित करने का है। संभव है कि वह इसमें सफल हो जाए, पर क्या यह सफलता स्थाई होगी? हाल के कुछ उपचुनाव नतीजों ने सेक्युलर जमात का मनोबल बढ़ाया है, लेकिन जब तक वह अपनी कमजोरियों पर काबू पाने की कोशिश नहीं करेगी तब तक उसे कोई स्थाई राजनीतिक लाभ नहीं मिलेगा। एक दल जब भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाता है तो उसे बुरा नहीं माना जाता, लेकिन दूसरे दल को ऐसी छूट देने को सेक्युलर जमात तैयार नहीं होती। जब 1963 में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने गणतंत्र दिवस परेड में शामिल होने के लिए आरएसएस को बुलाया था तो कम्युनिस्टों और कांग्रेसियों को इसमें कोई हर्ज नहीं नजर आया था। उस समय जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, 'मेरी पार्टी का संघ के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है, लेकिन जब देश संकट में हो तो हम सबको एकजुट होकर काम करना चाहिए।'

जब प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने पाकिस्तान से युद्ध के वक्त दिल्ली की ट्रैफिक व्यवस्था के संचालन का भार आरएसएस को दिया था तो कोई एतराज नहीं हुआ था, लेकिन जब पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी नागपुर गए तो अन्य नेताओं समेत माकपा नेता सीताराम येचुरी ने सख्त एतराज जताते हुए कहा कि प्रणब जी ने वहां गांधी हत्याकांड की चर्चा क्यों नहीं की? कांग्रेस के कुछ नेताओं ने पहले तो उन्हें नागपुर जाने से रोकने की कोशिश की। वह नहीं माने तो उन पर आक्षेप लगाए। जब प्रणब ने वहां जाकर संतुलित भाषण दिया तो कांग्रेसी ठंडे पड़ गए। हालांकि कई कांग्रेसी नेताओं को यह मलाल अभी भी है कि वह वहां गए ही क्यों? ऐसा ही मलाल उन्हें इंदिरा गांधी को लेकर नहीं हुआ था जब 1977 में संघ परिवार के निमंत्रण पर उन्होंने विवेकानंद रॉक मेमोरियल का उद्घाटन किया था। तब किसी कम्युनिस्ट या कांग्रेसी नेता ने संघ की पृष्ठभूमि को लेकर कोई विवाद खड़ा नहीं किया। तब किसी ने नहीं कहा कि इंदिरा जी ने वहां गांधी हत्याकांड का मामला क्यों नहीं उठाया? जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री और इंदिरा गांधी को लेकर कोई कांग्रेसी या कम्युनिस्ट आज भी सवाल नहीं उठा रहा है।

अवधेश राजपूत

इस पर भी कोई चर्चा नहीं कर रहा कि देश के सामने जैसा संकट 1963 या 1965 में था वैसा ही आज है या नहीं?

प्रणब मुखर्जी की नागपुर यात्रा पर तरह-तरह की बातें की गईं और अभी भी हो रही हैं। कुछ कम्युनिस्ट नेता ज्यादा ही मीन-मेख निकाल रहे हैं। एक तो यह उम्मीद कर रहे थे कि प्रणब नागपुर जाकर संघ को खरी-खोटी सुना कर वापस आ जाते। प्रणब दा ने यह अपेक्षा पूरी नहीं की। वैसे इससे पहले भी संघ को लेकर कई कम्युनिस्ट नेता समाजवादियों पर बेसिर-पैर के लगाते रहे हैं। यह बात और है कि कम्युनिस्टों की कसौटी के हिसाब से ऐसा ही आरोप खुद उन पर भी है। उनका आरोप यह रहा है कि समाजवादियों ने ही संघ परिवार के लिए राजनीतिक जमीन तैयार की यानी संघ-जनसंघ-भाजपा को मजबूत किया। उनका तर्क है कि जनसंघ और बाद में भाजपा के साथ मिली-जुली सरकार बना कर समाजवादियों ने संघ परिवार को समाज में प्रतिष्ठा दिला दी। इससे पहले उसे राजनीतिक तौर पर अछूत माना जाता था। दरअसल 1966-67 में प्रतिष्ठा तो माकपा के नेताओं को भी मिली जो 1962 में अपने चीनपरस्ती रवैये के कारण अलग-थलग पड़ गए थे। 1967 के आम चुनाव के बाद में देश के सात राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारें बनीं। बाद में अन्य दो राज्यों में कुछ कांग्रेसी विधायकों के दलबदल के कारण कांग्रेसी सरकारें गिर गईं और इसके उपरांत वहां भी गैर कांग्रेसी सरकारें बन गईं। उसी समय बिहार और उत्तर प्रदेश के मंत्रिमंडलों में एक साथ भाकपा और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य शामिल किए गए। इन सरकारों में जनसंघ के प्रतिनिधि भी थे। इस तरह देश में पहली बार सोशलिस्ट और जनसंघ के प्रतिनिधियों ने सत्ता में हिस्सेदारी की। यदि सोशलिस्ट नेताओं ने इस तरह जनसंघ को बढ़ाया और सम्मानित किया तो इसका श्रेय भाकपा को भी तो जाता है। आखिर वे उन मंत्रिमंडलों में क्यों शामिल हुए जिनमें जनसंघ भी था? यह हैरानी की बात है कि भाकपा नेता इसके लिए खुद को जिम्मेदार नहीं मानते। आखिर दोहरे मापदंड का इससे बेहतर उदाहरण और क्या हो सकता है?

1966 में डॉ. राममनोहर लोहिया ने कुछ गैर कांग्रेसी दलों को एक साथ आने पर राजी किया था। उनका तर्क था कि गैर कांग्रेसी दलों के मिलने के सिवाय और कोई उपाय नहीं है, क्योंकि कांग्रेस प्रतिपक्ष के वोट के बंटवारे का लाभ उठाकर चुनाव दर चुनाव सत्ता हासिल करती जा रही है। यह भी याद रहे कि 1989 में जब विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में सरकार बनी तो भाजपा और वामपंथी दल उसे बाहर से समर्थन दे रहे थे। क्या इससे भाजपा की ताकत नहीं बढ़ी? देखा जाए तो परोक्ष या प्रत्यक्ष ढंग से भाजपा के साथ काम करने के बावजूद कम्युनिस्ट खुद को जिम्मेदार नहीं मानते, लेकिन वे दूसरे दल को जिम्मेदार जरूर ठहरा देते हैं। 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व में राजग की भारी जीत के बाद कांग्रेस ने पूर्व रक्षा मंत्री एके एंटनी के नेतृत्व में एक कमेटी बनाई ताकि वह हार के कारणों की जांच कर सके। जून, 2014 में एंटनी ने अन्य बातों के साथ -साथ यह भी कहा, 'मुस्लिम तुष्टीकरण कांग्रेस की हार का मुख्य कारण रहा। जनता में संतुलित धर्मनिरपेक्षता वाली हमारी साख अब नहीं रही।'

जो बात एंटनी ने नहीं कही वह यह थी कि भाजपा के उभार का दूसरा बड़ा कारण मनमोहन सरकार पर लगे भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप थे। अपने शासनकाल में मनमोहन सरकार इन आरोपों को गलत बताती रही। जाहिर है कि इससे जनता का रोष बढ़ा और उसका लाभ सबसे बड़े विपक्षी गठबंधन यानी राजग को मिला। एक तरह से राजग की जीत में संप्रग सरकार का 'योगदान' था। आज भी अधिकतर राजग विरोधी दल उन दो प्रमुख कारणों को समाप्त करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं जो 2014 में उनकी हार के कारण बने थे। इसके बदले वे दलीय गठजोड़ पर जोर दे रहे हैं। पता नहीं, यह कितना कारगर साबित होगा, क्योंकि अपनी हर विफलता के लिए किसी और को दोषी ठहरा कर कुछ हासिल नहीं किया जा सकता।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

सोशल मीडिया का स्वर्गिक आनंद

हास्य-व्यंग्य

शिव कुमार राय

स्वर्ग से आया दूत यह देखकर हैरान था कि धरतीवासी हाथ में लिए यंत्र को या तो घूरते हैं या फिर उसे कान से सटाते हैं

स्वर्गाधिपति को इधर काफी दिनों से ऐसा लग रहा था कि अपने अच्छे कर्मों की वजह से जिन पृथ्वीवासी मनुष्यों को मृत्यु के बाद स्वर्ग में लाया जा रहा है वे कुछ खास प्रसन्न नहीं दिख रहे। वे दिन भर खोए-खोए और अलसाए से नजर आते हैं। स्वर्ग के पुराने निवासियों से बातचीत और मेल जोल बढ़ाने को कौन कहे, वे आपसी संवाद में भी कोई खास रुचि नहीं दिखाते। न तो श्रेष्ठतम नर्तकियों का नृत्य उन्हें आनंद दे पा रहा था, न ही विदूषकों से भरे नाटक ही उनके चेहरों पर मुस्कान ला पाने में समर्थ हो पा रहे थे। जबकि माना यही जाता था कि पृथ्वीवासी धरती पर इसलिए डर-डरकर रहते हैं कि यह काम करेंगे या नहीं करेंगे तो भगवान नाराज हो जाएंगे और उन्हें मरने के बाद स्वर्ग का टिकट मिलने की जगह नर्क जाने वाली पैसेंजर गाड़ी में बिठा दिया जाएगा। स्वर्ग की प्राप्ति ही तो धरतीवासियों के जीवन का लक्ष्य होता है, लेकिन अब लक्ष्य प्राप्ति के बाद भी नव स्वर्गवासी हुए पूर्व धरतीवासी आनंदित नहीं दिख रहे थे। इसका कारण खोजने के लिए एक विशेष दूत को जिम्मेदारी दी गई। पहले तो उसने सोचा कि हो सकता है कि जगह बदल जाने की वजह से इन नव स्वर्गवासियों को नींद न आ रही हो और इसीलिए वे दिन भर अलसाए से नजर आते हैं। फिर उसने यह सोचा कि शायद गुटखा, खैनी पान, बीड़ी और सिगरेट की तलब न पूरी होने से मूड बिगड़ा रहता हो। उसने नवस्वर्गवासियों से कारण जानना चाहा तो वे बताने को तैयार तो दिखे, लेकिन कमजोर स्मरणशक्ति के कारण कुछ बता नहीं सके।

दूत ने समस्या की जड़ तक जाने के लिए स्वर्ग के स्थलीय निरीक्षण का निर्णय किया और पहली उड़ान पकड़कर पृथ्वी पर आ गया। यहां आने पर उसे कारण की खोज में ज्यादा वक्त नहीं गंवाना पड़ा। पहले दिन नगर भ्रमण में उसने देखा कि हर नर-नारी और बाल-वृद्ध और यहां तक कि अमीर-गरीब हाथ में एक छोटा सा यंत्र लिए उसे या तो बार-बार घूरता है या फिर उसे कान पर लगाकर जोर-जोर से बोलने लगता है। उसे लगा कि शायद लोग अपने ही बोले शब्द कान से सुनने का काम कर रहे हैं। ट्रेन में, बस में, ऑफिस में, घर में और यहां तक कि सड़क पर यही नजारा देखकर स्वर्ग से धरती पर आया दूत हैरान रह गया।

उसे समस्या की जड़ दिखने लगी, लेकिन वह उसकी तह तक नहीं जा सका। थोड़ी खोज-बीन और पूछताछ करने पर पता चला कि जिसे वह अबूझ यंत्र समझ रहा था वह स्मार्टफोन नाम की कोई चीज है। जल्द ही उसे पता चला कि इसे मोबाइल फोन, सेलफोन भी कहते हैं। उसे सूत्रों से यह भी जानकारी मिली कि मीडिया के अलावा सोशल मीडिया नाम की भी चीज धरती पर चलन में आ गई है। वह सोशल मीडिया की जांच में जुटा तो यह पाया कि इस पर तो पूरा एक ग्रंथ लिखा जा सकता है। जल्द ही वह सेल्फी, लाइक, पोस्ट, रीट्वीट, ट्रोल आदि शब्दों से परिचित हुआ। उसने यह भी पाया कि सोशल मीडिया की कृपा से तमाम पृथ्वीवासी महान कवि, लेखक, चित्रकार, शायर बने पड़े हैं। सारी जानकारी जुटाकर दूत खुशी-खुशी स्वर्ग लौटा और स्वर्गाधिपति को सारा हाल सुनाया कि अब पहले वाला जमाना न रहा। पृथ्वी पर संचार की दुनिया में इतनी क्रांति हो गई है कि बिना उसके पृथ्वीवासियों को कुछ अच्छा ही नहीं लगता।

सुबह उठते, रात सोते तक अपना स्टेटस अपडेट करते रहने और फिर ढेरों लाइक/कमेंट पाने की जो खुशी है उसके आगे तो पुराने जमाने का स्वर्गिक सुख भी घुटने टेक रहा है। ऐसे में स्वर्ग को हाईटेक बनाना ही होगा वरना मरने के बाद कोई पृथ्वीवासी स्वर्ग पाने की कामना नहीं करेगा। स्वर्गाधिपति ने मामले पर विचार किया और दूत के सुझाव से सहमति जताई। तत्काल ताजा-ताजा स्वर्गवासी हुए कुछ तकनीकी शिक्षाप्राप्त मनुष्यों की स्मरणशक्ति दुरुस्त कर एक अधिकारप्राप्त समिति गठित की गई और उसे स्वर्ग में भी इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया की शुरुआत के लिए जरूरी उपाय सुझाने के लिए कहा गया। समिति के सदस्यों के मुख से स्मार्टफोन इंटरनेट, लाइक आदि शब्द सुनते ही नव स्वर्गवासी हुए मनुष्य प्रसन्न दिखने लगे। ऐसा लगा कि इन शब्दों ने उनकी स्मरणशक्ति लौटा दी थी। स्वर्ग आने के बाद पहली बार उनके चेहरे पर मुस्कुराहट देखी गई। ताजा-ताजा स्वर्गवासी कुछ मनुष्यों को इसी कारण स्वर्ग में भी स्टार्टअप बनाने का अवसर दिखाई पड़ने लगा।

सोशल मीडिया के जरिये जब यह जानकारी धरती पर पहुंची कि स्वर्ग में हाईटेक होने जा रहा है तो ऐसी खबरें वायरल होने लगीं कि सरकारों की भरपूर कोशिशों के बावजूद पृथ्वी पर तो स्वर्ग न आ सका, मगर अब जल्दी ही 'स्वर्ग पर पृथ्वी' आने का सपना साकार हो जाएगा। हो सकता है कि आपने भी ऐसी वायरल खबर पढ़ी हो। अगर नहीं पढ़ी तो जल्द ही पढ़ने को मिल सकती है। मुझे पक्का यकीन है कि कम से कम वाट्सएप संदेश तो मिलेगा ही।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य | एलपीजी के घरेलू उपभोक्ता

(संख्या लाख में)

स्रोत : पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय

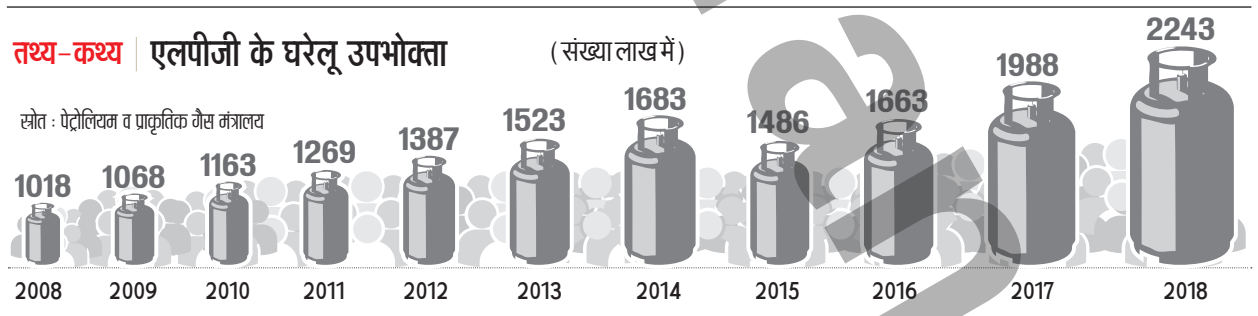

ऊर्जा

अच्छाई

अच्छा बनने की राह में जिस व्यक्ति से कुछ सीखा जाता है, उसका बड़ा-छोटा होना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण है उससे सीखी जाने वाली बात। यदि किसी बहुत बड़ी हस्ती में कोई ऐब है तो वह त्याज्य है और यदि किसी बहुत छोटे आदमी में कोई सद्गुण है तो वह ग्राह्य है। यही कारण है कि दार्शनिक प्लेटो अपने पास कुछ सीखने और ज्ञान हासिल करने वालों से स्वयं ही सीखने लगते थे। उनका मानना था कि मानव का लक्ष्य मानवता की प्राप्ति है, व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व की प्राप्ति नहीं। दार्शनिक प्लेटो का आदर्श सार्वभौम अच्छाई है, सीमित अच्छाई नहीं। मनुष्य को ब्रह्म का अंश कहा जाता है। उसके अंदर भगवान का निवास माना जाता है। इससे सिद्ध है कि उसमें प्रच्छन्न रूप से इतनी अधिक शक्ति मौजूद रहती है कि वह अपने भीतर के सत् तत्व का सहारा लेकर अपनी सारी राक्षसी वृत्तियों का दमन कर सकता है और कितना भी अच्छा और कितना भी बड़ा बन सकता है। मनुष्य अपना निर्माता स्वयं है, जिसके लिए वह प्रेरणा और संबल कहीं से भी, किसी से भी ले सकता है। यदि वह हर व्यक्ति से कुछ लेने और सीखने का रास्ता खुला रखे तो उसकी उपलब्धियों की कोई सीमा नहीं रहेगी। हमारे जीवन के गुणात्मक पहलू को ऊंचा बनाने के लिए आदमी की तीसरी आंख जाग्रत होनी चाहिए और चरित्रनिष्ठा का विकास भी होना चाहिए।

जो आदमी अनीति के रास्ते पर चलता है, उसका बीच में ही पतन हो जाता है। इसलिए व्यक्ति सही-गलत व अच्छे-बुरे का विवेक रखता हुआ अपने गुणात्मक पक्ष को मजबूत बनाने का प्रयास करे। गुणी व्यक्ति सबका प्रिय बन सकता है। हमारी दुनिया में कुछ श्रेष्ठ लोग होते हैं, कुछ मध्यम या सामान्य स्थिति के लोग होते हैं और कुछ अधम स्थिति के लोग भी मिल जाते हैं। यह दुनिया बहुरंगी है। धरती में अनेक प्रकार के रत्न हैं तो कुछ कंकर भी हैं। एक समूह या समाज जहां होता है वहां कुछ व्यक्ति बहुत अच्छे मिल सकते हैं तो कुछ व्यक्ति सामान्य मानव गुणों की रेखा से नीचे भी मिल सकते हैं। गीता में कहा गया है-श्रेष्ठ आदमी जैसा आचरण करता है, उसे देखकर दूसरे भी वैसा आचरण करने लगते हैं। सामान्य आदमी उसे प्रमाण मानकर वैसा आचरण करने का प्रयास करता है।

ललित गर्ग

राजी होने की कहानी

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय नागपुर जाने पर गरम सियासत उनके भाषण के बाद जरूर थम गई है। कांग्रेस नेता सार्वजनिक रूप से उनके विचारों की गहराई की व्याख्या करते नहीं थक रहे। मगर अभी भी पार्टी के सियासी गलियारे में दादा के जाने की पहले भनक नहीं लग पाने को लेकर अटकलों के किस्से थमे नहीं हैं। ऐसा बड़ा राजनीतिक फैसला लेने से पहले मुखर्जी ने किसी पार्टी नेता से मशविरा नहीं किया तो फिर उन्हें नागपुर जाने के लिए किसने राजी कर लिया? इन सवालों के बीच कांग्रेस नेता अंदरखाने पूर्व राष्ट्रपति की सचिव रहीं ओमिता पॉल की भूमिका मान रहे। पॉल लंबे अर्से तक मुखर्जी के साथ काम कर चुकी हैं और अभी भी उनके फाउंडेशन से जुड़ी हैं। पार्टी नेता दबी जुबान में यह भी कह रहे कि पॉल के प्रभाव की वजह से ही नागपुर जाने के कार्यक्रम की जानकारी उन्हें जब मिली तब तक देरी हो चुकी थी। इसीलिए तमाम दबाव और सवालों के तीर भी दादा को डिगा नहीं पाए।

फिटनेस का जलवा

नीति आयोग में बैठने वाले एक आला अधिकारी अक्सर चर्चा में रहते हैं। इस बार उनकी चर्चा की वजह फिट इंडिया चैलेंज है। हुआ दरअसल यह कि अधिकारी महोदय ने बॉक्सिंग करते हुए अपनी एक वीडियो सोशल मीडिया पर साझा की और वित्त मंत्रालय तथा पेय एवं स्वच्छता विभाग के अपने समकक्ष दो अधिकारियों को उनकी फिटनेस का वीडियो शेयर करने की चुनौती दे दी। बताया जाता है कि जिन अधिकारियों को चुनौती दी गई वे तो यह वीडियो देखकर सन्न रह गए। खुद को एथलीट के तौर पर प्रचारित करने वाले ये दोनों अफसर कई दिन तक चुनौती स्वीकार करने से कतराते रहे। आखिरकार इनमें से एक ने रनिंग करते हुए अपना वीडियो साझा कर कैसे भी फिटनेस चैलेंज से पल्ला छुड़ाया। तब से अधिकारी महोदय का जलवा कायम है। वैसे इसका एक असर यह हुआ है कि उनके कई मातहतों ने भी दौड़ना शुरू कर दिया है।

राजरंग

साहब हों तो ऐसे

शास्त्री भवन के गलियारों में इन दिनों में एक साहब की दिलेरी के खूब चर्चे हैं। हुआ यह कि साहब ने हाल ही में अपने अधीनस्थ काम करने वाले सभी कर्मचारियों को घूमने की बारी-बारी से छुट्टी दी। साथ ही उन सभी के घूमने का टूर प्लान भी तैयार कराने में मदद दी। साहब ठहरे सामजिक न्याय वाले। सो उन्होंने दिल्ली की भारी गर्मी को देखते हुए सभी को ठंडे स्थानों पर ही भेजा। इसकी भनक जैसे ही दूसरे मंत्रालयों में काम करने कर्मचारियों को लगी तो अब सभी सामाजिक न्याय वालों की नजीर देते फिर रहे हैं। हालांकि यह साहब की व्यक्तिगत रुचि का मामला था, सो इस बात को दूसरों ने ज्यादा तवज्जो नहीं दी। वहीं साहब की इस दिलेरी से अधीनस्थों की बांछे खिली हुई हैं। वे पूरे शास्त्री भवन में साहब की दिलेरी के किस्से सुनाते नहीं थक रहे हैं।

अनुवाद में अटका

पीएम मोदी और राष्ट्रपति चिनफिंग के बीच वुहान में बहुत अच्छी बातचीत हुई। माना जा रहा है कि यह दोनों देशों के रिश्तों को नई राह दिखाने वाली मुलाकात है। दोनों नेताओं की तरफ से अपने-अपने अधिकारियों को तमाम निर्देश दिए गए हैं कि किस तरह से रिश्तों को प्रगाढ़ बनाया जाए और तल्खी दूर की जाए। अब असल समस्या इन निर्देशों को अमल करने को लेकर होने वाली बैठकों में पेश आ रही है। दिक्कत की वजह यह है कि दोनों नेता अपनी-अपनी भाषा में बात करते हैं। मोदी अपनी विशिष्ठ शैली में हिंदी में बात करते हैं, जबकि चीन के राष्ट्रपति मेंडारियन में बात करते हैं। दोनों के बीच अनुवादक होते हैं, लेकिन भारतीय व चीन के विदेश मंत्रालयों के अधिकारी दोनों नेताओं की तरफ से मिले निर्देशों में से कुछ को समझ नहीं पा रहे हैं। ऐसे में तय हुआ है कि सीधे तौर पर दोनों नेताओं से ही बात की जाए कि आखिरकार उन्होंने जो निर्देश दिए हैं उसका मतलब क्या था।

ट्वीट-ट्वीट

विपक्षी मकान को 'वाइट हाउस' कह रहे हैं, तो क्या वो सब खुद 'ब्लैक हाउस' में रहते हैं।
अखिलेश यादव@yadavakhilesh

झूठी कहानियां और इतिहास पढ़ा कर किस तरह एक पूरे देश के भीतर दरार डाली गई और हीनभावना को बढ़ावा दिया गया। सिनौली का रथ अब शायद इतिहास पर की गई उन साजिशों को कुचल कर आगे बढ़ जाएगा!!
अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

पीपल के पत्तों जैसा मत बनो जो वक्त आने पर सूख कर गिर जाते हैं। बनना है तो मेहंदी के पत्तों जैसा बनो जो पिसकर भी दूसरों की जिंदगी में रंग भर देते हैं।
आकाश चोपड़ा@cricketaakash

योगी जी के सचिव पर '25' लाख 'रिश्वत' मांगने का आरोप लगाने वाले अभिषेक गुप्ता ने 'पुलिस' हिरासत में खुद को 'पागल' मान लिया, लेकिन 'पागल' को ये पता कैसे चला कि वो 'पागल' है।
आचार्य प्रमोद@AcharyaPramodk

27 अक्टूबर, 2013 को गांधी मैदान, पटना में बम धमाके नरेंद्र मोदी की हत्या की साजिश का जिंदा सुबूत है, नक्सली अभी भी योजना बना रहे हैं। धमाके मेरी आंखों के सामने हुए। मैं खुशनसीब था जिंदा बच गया। हत्या की साजिश पर राजनीति क्यों?
विकास भदौरिया एबीपी@vikasbha

जनपथ

जाते-जाते ले गए एसी-पंखा नोच,
क्या इसको ही हम कहें समाजवादी सोच।
समाजवादी सोच लगा था किसका पैसा,
था सरकारी माल किया फिर कैसे ऐसा?
हम देते हैं टैक्स और नेता जी खाते,
ले जाते हैं नोच माल सब जाते-जाते!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 28 अंक 326